भगिनी निवेदिता : जिनकी लेखनी, वाणी और कर्म हम भारतीयों के लिए दीपस्तंभ व प्रेरणा स्रोत है

भारत के इतिहास में कुछ ऐसे नाम हैं जो जन्म से भारतीय नहीं थे, परंतु कर्म से, हृदय से और आत्मा से पूर्ण रूप से भारतीय बन गए। भगिनी निवेदिता ऐसा ही एक नाम है। जिनका मूल नाम मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल था, वे स्वामी विवेकानंद की शिष्या, श्री शारदा माँ की मानस पुत्री और भारत माता की सच्ची सेविका थीं। मार्गरेट का जन्म 28 अक्टूबर 1867 को आयरलैंड के डंगानन नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता सैमुअल रिचमंड नोबल एक धर्म प्रचारक थे और माता मैरी इसाबेल एक धर्मनिष्ठ महिला थीं। बचपन से ही मार्गरेट में सत्य की खोज, सेवा की भावना और स्वतंत्र विचारों की झलक मिलती थी। पिता की अकाल मृत्यु ने उन्हें जीवन की नश्वरता का बोध करा दिया।

शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने शिक्षिका का कार्य प्रारंभ किया। वे केवल पढ़ाती नहीं थीं, शिक्षा की नई-नई विधियों पर प्रयोग करती थीं। लंदन में उनका विद्यालय बहुत प्रसिद्ध हुआ। इसी दौरान वे ईसा के संदेश, बुद्ध के त्याग और समाजवाद जैसे विचारों का गहन अध्ययन कर रही थीं। उनके मन में एक बेचैनी थी ,जीवन का सच्चा उद्देश्य क्या है? सन् 1895 में लंदन में एक सभा में उनकी भेंट स्वामी विवेकानंद से हुई। स्वामी जी उस समय वेदांत का प्रचार कर रहे थे। मार्गरेट ने स्वामी जी से पूछा था कि आप भारत के लिए क्या करना चाहते हैं? स्वामी जी ने कहा ; मैं भारत को उसकी आध्यात्मिक शक्ति का बोध कराना चाहता हूँ और भारत की महिलाओं को शिक्षित करना चाहता हूँ। यह वाक्य मार्गरेट के हृदय में तीर की तरह लगा। उन्हें लगा कि यही वह कार्य है जिसके लिए वे बनी हैं। स्वामी जी ने उन्हें भारत आने का निमंत्रण दिया, परंतु कहा कि यह मार्ग बहुत कठिन है। मार्गरेट ने निश्चय कर लिया। 28 जनवरी 1898 को मार्गरेट कोलकाता पहुँचीं। स्वामी विवेकानंद ने उनका स्वागत किया। 25 मार्च 1898 को स्वामी जी ने उन्हें ब्रह्मचर्य की दीक्षा दी और नया नाम दिया , निवेदिता, अर्थात समर्पित। जो ईश्वर और भारत के प्रति निवेदित हो। निवेदिता ने भारतीय वेशभूषा धारण की, शाकाहारी भोजन प्रारंभ किया, बंगला भाषा सीखी और एक भारतीय विधवा की तरह कठोर जीवन जीना शुरू किया। वे बागबाजार में एक छोटे से मकान में रहने लगीं। निवेदिता का पहला कार्य था भारतीय महिलाओं को शिक्षित करना। नवंबर 1898 में उन्होंने बागबाजार में एक कन्या विद्यालय प्रारंभ किया। उस समय बंगाल में पर्दा प्रथा चरम पर थी, लड़कियों को स्कूल भेजना पाप समझा जाता था। निवेदिता घर-घर जाकर माताओं को समझातीं, बच्चों को प्यार से पढ़ातीं, सिलाई, कढ़ाई, चित्रकला के साथ-साथ रामायण, महाभारत और देशभक्ति की कहानियाँ भी सुनातीं। 1899 में जब कोलकाता में प्लेग महामारी फैली, तब निवेदिता ने अपनी जान की परवाह न करते हुए सेवा कार्य किया। वे गली-गली जाकर सफाई करतीं, रोगियों को दवा देतीं, लोगों को हिम्मत बँधातीं। उनके इस कार्य को देखकर लोगों ने उन्हें सच में अपनी बहन मान लिया। स्वामी विवेकानंद के देहांत के बाद निवेदिता ने स्वयं को पूरी तरह राष्ट्र सेवा में लगा दिया। वे समझ गई थीं कि भारत की परतंत्रता का मूल कारण है, आत्मविस्मृति। भारतीय अपने गौरव को भूल गए हैं। उन्होंने जगदीश चंद्र बसु जैसे वैज्ञानिकों को आर्थिक सहायता दिलाई और उनके आविष्कारों को दुनिया के सामने रखा। रवींद्रनाथ ठाकुर, अवनींद्रनाथ ठाकुर, असित कुमार हल्दर जैसे कलाकारों को प्रेरित किया कि वे भारतीय शैली की चित्रकला विकसित करें, जिसे आगे चलकर बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट कहा गया। 1905 के बंग-भंग आंदोलन में निवेदिता खुलकर सामने आईं। उन्होंने युवाओं में स्वदेशी का प्रचार किया, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने का आह्वान किया। उनका मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता से पहले सांस्कृतिक स्वतंत्रता आवश्यक है। उनकी दो प्रसिद्ध पुस्तकें 'द वेब ऑफ इंडियन लाइफ' और 'काली द मदर' में उन्होंने भारतीय संस्कृति, धर्म और समाज का जो सजीव चित्रण किया है, वैसा कोई विदेशी लेखक नहीं कर सका। निवेदिता की गुरु भक्ति अलौकिक थी। वे स्वामी विवेकानंद को शिव के रूप में देखती थीं। वहीं श्री शारदा माँ, जिन्हें वे 'माँ' कहती थीं, के प्रति उनका प्रेम एक पुत्री जैसा था। श्री माँ ने भी उन्हें अपनी बेटी के रूप में अपनाया था। यह दो संस्कृतियों का अद्भुत संगम था। उन्होंने कभी भारत को दया की दृष्टि से नहीं देखा। उन्होंने कहा था, 'भारत मेरा कर्मक्षेत्र है, मेरी मातृभूमि है। मैं उसकी सेवा किसी विदेशी की तरह नहीं, बल्कि उसकी पुत्री की तरह करूँगी।' अत्यधिक परिश्रम, निरंतर यात्राओं और चिंताओं के कारण निवेदिता का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। 13 अक्टूबर 1911 को दार्जिलिंग में केवल 43 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया। अंतिम समय में उन्होंने कहा था, 'मेरी अस्थियों को गंगा में विसर्जित कर देना, क्योंकि मैं भारत को कभी नहीं छोड़ना चाहती।' दार्जिलिंग में ही उनकी समाधि है, जिस पर लिखा है ; 'यहाँ भगिनी निवेदिता चिरनिद्रा में लीन हैं, जिन्होंने अपना सर्वस्व भारत को निवेदित कर दिया।' भगिनी निवेदिता का जीवन हमें सिखाता है कि देशभक्ति रक्त से नहीं, संकल्प से होती है। वे आयरिश थीं, ईसाई थीं, गोरी थीं, फिर भी उन्होंने भारत के लिए वह किया जो कई भारतीय भी नहीं कर सके। आज जब हम राष्ट्रवाद, नारी शिक्षा और आत्मनिर्भर भारत की बात करते हैं, तो भगिनी निवेदिता का जीवन हमारे लिए दीपस्तंभ है। हम सबको उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए कि कैसे एक व्यक्ति अपनी लेखनी, अपनी वाणी और अपने कर्म से पूरे समाज में चेतना जगा सकता है। देश के सामाजिक,साहित्यिक व सांस्कृतिक केंद्रों पर भगिनी निवेदिता की जयंती मनाना, उनके विचारों पर गोष्ठी करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सुनील कुमार वाजपेयी शिवम

नवरात्रि विशेष : देवी का तृतीय स्वरूप चन्द्रघण्टा

शारदीय नवरात्रि का आज तीसरा दिन है। आज भक्तजन माँ के तृतीय स्वरुप का पूजन कर उन्हें प्रसन्न करेंगे। दुर्गा सप्तशती में माँ स्वयं कहती हैं - एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः। तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम॥

अर्थात जो एकाग्रचित होकर इन स्तुतियों से मेरा स्तवन करेगा, उसकी समस्त बाधाओं का मैं निश्चित नाश करूंगी, इसमें कोई संशय नहीं है। आज का यह दिवस माता चन्द्रघण्टा को समर्पित है। माँ चन्द्रघण्टा के पूजन का इस दिन विशेष महत्व है।

ध्यान मन्त्रः-

पिण्डजप्रवरारुढा चण्डकोपास्त्रकैर्युता।

प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता।।

अर्थ - जो श्रेष्ठ सिंह पर सवार है, जो दुष्टों के संहार हेतु भयंकर क्रोध में विभिन्न प्रकार के अस्त्रों-शस्त्रों को धारण की हुई है।

जगत में चन्द्रघण्टा नाम से विख्यात देवी मुझे प्रसन्नता के साथ अपनी कृपा प्रदान करें।

माँ का बीज मन्त्र -

!! ? देवी चन्द्रघण्टायै नमः !!

देवी चन्द्रघण्टा के पूजन एवं अराधना का यह पावन दिवस भक्तों हेतु अत्यंत कल्याणकारी है। देवी के मस्तक अर्थात ललाट पर घंटे के आकार का अर्धचंद्र सुशोभित हो रहा है इसी कारण से इन्हें चन्द्रघण्टा कहा जाता है। इनका शरीर स्वर्ण के समान अत्यन्त चमकीला है। माँ के दस हाथ है। दसों हाथ अस्त्र, कमल पुष्प, कमण्डल खड्गादि से सुशोभित हो रहे है। सिंह पर सवार देवी चन्द्रघण्टा असुरों के संहार हेतु युद्ध के लिए सदैव तत्पर रहती है। वह अपने भक्तों की रक्षा एवं मनवांछित फल देने के लिए भी सदा तत्पर रहती है।

माँ चन्द्रघण्टा श्रद्धालु भक्तों की भय पीड़ा व दुःखों को मिटाने वाली है। भक्त जनों के मनोरथ को पूर्ण करने वाली है। माँ भयंकर दैत्य सेनाओं का संहार करके देवताओं को उनका भाग दिलाने वाली है। भक्तों को वांछित फल दिलाने वाली हैं। देवी सम्पूर्ण जगत की पीड़ा का नाश करने वाली है। जिससे समस्त शास्त्रों का ज्ञान होता है, वह मेधा शक्ति हैं। भव सागर से उतारने वाली है। इनका मुख मंद मुस्कान से सुशोभित, निर्मल, पूर्ण चन्द्रमा के बिम्ब का अनुकरण करने वाला और उत्तम सुवर्ण की मनोहर कान्ति से कमनीय है। असुर शक्ति इन्हें देख ही कांप उठती है। इनका स्वरूप सुन्दर, मोहक, अलौकिक कल्याणकारी एवं शांतिदायक है। माँ की घण्टे की ध्वनि से समस्त बुरी शक्तियों का समूल नाश हो जाता है।

देवी चन्द्रघण्टा की कथा

पुराणों में वर्णित कथा के अनुसार महिषासुर असुरों का राजा अर्थात स्वामी था। अधर्म, अत्याचार ही उसका मुख्य उद्देश्य था। पूरे जगत पर वह एकक्षत्र राज चाहता था। वह देवराज इन्द्र का सिंहासन पाना चाहता था। देवराज इन्द्र आदि देव अपने सिंहासन की रक्षा हेतु महिषासुर से युद्ध करने लगे। परन्तु महिषासुर उन पर भारी पड़ा। देवगण स्वयं पर हो रहे, इस प्रकार का अत्याचार देख परेशान हो गए और इस समस्या से निकलने का उपाय जानने के लिए त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश के पास पहुँचे देवताओं के मुख से महिषासुर के अत्याचार को जानकर तीनों देव अत्यंत क्रोधित हुए। उस क्रोध के कारण उनके मुख से ऊर्जा उत्पन्न हुई। इसी ऊर्जा से देवी का अवतरण हुआ।

देवी को शिवजी ने अपना त्रिशूल, भगवान विष्णुजी ने अपना चक्र प्रदान किया। वहीं ब्रह्माजी ने अपना कमंडल दिया। इस प्रकार सभी देवताओं ने देवी को कुछ-न-कुछ भेंट किया। जैसे इंद्रदेव से माँ भगवती को वज्र एवं ऐरावत हाथी मिला तो भगवान सूर्यदेव ने उन्हें अपना तेज भेंट किया। सबसे आज्ञा पाकर देवी चन्द्रघण्टा महिषासुर के साथ युद्ध की और अन्ततः घण्टे की टंकार से उसका सर्वनाश कर सभी देवताओं एवं धर्म की रक्षा की।

देवी चन्द्रघण्टा की शक्ति

इस दिन साधक का मन 'मणिपुर चक्र' में स्थित होता है। चन्द्रघण्टा के स्पंदन से मनुष्य में स्पष्ट और उचित निर्णय की क्षमता पूर्ण चमक व धमक के साथ प्रकट होती है। दिव्य सुगंधियों का अनुभव होता है। व्यक्ति में बौद्धिक क्षमता का विकास, स्वयं पर विश्वास व ज्ञान के प्रकाश का संचार होता है। देवी के कृपा से समस्त पाप और बाधाएँ शीघ्र दूर हो जाते हैं। देवी का ध्यान इहलोक एवं परलोक दोनों के लिए कल्याणकारी एवं सद्गति देने वाला है। इनके कृपा से साधक के जीवन में किसी चीज की कमी नहीं रह जाती है। इनका उपासक सिंह की तरह पराक्रमी होता है और सभी प्रकार के भय से दूर हो जाता है।

देवी चन्द्रघण्टा को प्रिय -देवी को लाल वर्ण यानी लाल रंग पसन्द है। इसलिए माँ को लाल पुष्प चढ़ाना चाहिए। गुड़हल का पुष्प देवी को अर्पित करना चाहिए। देवी को सफेद कमल का पुष्प भी अर्पित करना लाभकारी है। रक्त चन्दन और लाल चुनरी समर्पित करना भी उत्तम है। पूजा में दूध या दूध से बनी चीजों का भोग लगाना चाहिए। लाल सेव तथा शहद का भी भोग श्रेयस्कर है।

राजीव नंदन मिश्र
सरना, भोजपुर (बिहार)
मो - 7004235870

भारतीय कृषि में महिलाओं की बढ़ती ताकत: कॉर्टेवा की #wMillionWomen पहल के 2 साल पूरे

ग्रामीण भारत में महिलाओं को हुनरमंद बनाने, उनकी कमाई बढ़ाने और बदलाव का नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाना

नई दिल्ली, दो साल पहले, कॉर्टेवा एग्रीसाइंस ने एक सरल और पूरे यकीन के साथ #wMillionWomen पहल की शुरुआत की थी: जब महिलाएं आगे बढ़ेंगी, तब खेती-किसानी भी आगे बढ़ेगी। आज, वह विश्वास हकीकत में बदल रहा है। पूरे ग्रामीण भारत में महिलाएं अपनी आजीविका यानि कमाई को मजबूत कर रही हैं। वे खेती के बेहतर और नए तरीके अपना रही हैं। वे नए-नए व्यवसाय शुरू कर रही हैं। वे आगे बढ़कर जिम्मेदारी संभाल रही हैं और अपने समाज में बदलाव ला रही हैं। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की जो शुरुआत एक वादे के साथ हुई थी, वह आज एक बड़े आंदोलन का रूप ले चुकी है। यह आंदोलन भारत के पूरे कृषि क्षेत्र में एक ऐसा बदलाव ला रहा है जो लंबे समय तक बना रहेगा।

सितंबर 2024 में शुरू की गई #wMillionWomen, कॉर्टेवा की एक खास पहल है। इसका लक्ष्य 2030 तक भारत के पूरे कृषि क्षेत्र में महिलाओं को आत्मनिर्भर और मजबूत बनाना है। खेती-किसानी में महिलाओं की भागीदारी और उनके नेतृत्व को आगे बढ़ाने के लिए, यह किसी बड़ी कंपनी द्वारा शुरू की गई सबसे पहली और बड़े स्तर की पहलों में से एक है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को वे सभी हुनर, जानकारी और अवसर देना है जिनकी मदद से वे एक सफल किसान, बिजनेस लीडर और समाज में बदलाव लाने वाली मार्गदर्शक बन सकें।

अवसर को नेतृत्व में बदलना-पूरे देश में महिलाएं अवसरों को हकीकत में बदल रही हैं। वे खेतों की पैदावार बढ़ा रही हैं। अपनी कमाई के साधन बढ़ा रही हैं। नए बाज़ारों तक पहुँच बना रही हैं। अपने व्यवसाय को और मजबूत कर रही हैं। इसके साथ ही, वे अपने परिवार, समाज और किसान संगठनों में बड़ी जिम्मेदारियां संभाल रही हैं।

इनमें से कई महिलाएं दूसरी महिलाओं के लिए मिसाल बन रही हैं। वहीं कुछ महिलाएं स्थानीय संस्थाओं को मजबूत करने और आने वाली पीढ़ियों के लिए आगे बढ़ने के नए रास्ते बनाने में मदद कर रही हैं।

पीढ़ियों से, मध्य प्रदेश के उमरिया जिले की महिलाएं महुआ के फूल इकट्ठा करती थीं। वे इन्हें बेहद कम दामों में बेच देती थीं या इनसे कच्ची शराब बनाती थीं, जिससे वे गरीबी और सामाजिक बदनामी के चक्रव्यूह में फंसी हुई थीं। लेकिन महिलाओं के नेतृत्व वाले एक किसान उत्पादक संगठन (FPO) ने इस पूरी कहानी को बदल कर रख दिया। शराब बनाने के बजाय, इन महिलाओं ने इन फूलों से बेहतरीन और पोषक तत्वों से भरपूर TRIBO महुआ लड्डू बनाना शुरू किया। इस तरह, जंगलों से फूल बीनने वाली ये मजबूर महिलाएं आज आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बिजनेस लीडर बन चुकी हैं।

मजबूत महिलाएं मिलकर मजबूत परिवार बना रही हैं। मजबूत किसान संगठन बना रही हैं। और एक मजबूत ग्रामीण समाज का निर्माण कर रही हैं।

एक नजर में प्रभाव- पिछले दो सालों में, #wMillionWomen पहल ने ग्रामीण भारत में बहुत बड़े स्तर पर बदलाव लाया है। यह पहल 22 राज्यों के 7,95,000 से अधिक लोगों तक पहुँची है, जिनमें 6,37,000 से अधिक महिलाएँ शामिल हैं। लगभग 49,000 महिलाएँ अब लीडर और कम्युनिटी चैंपियन के रूप में काम कर रही हैं, जो अपने समाज के भीतर से बदलाव लाने में मदद कर रही हैं।

सिर्फ लोगों तक पहुँचने के अलावा, इस पहल का मुख्य जोर इस बदलाव को हमेशा बनाए रखने पर है। इसके तहत 90,000 से अधिक किसानों को ट्रेनिंग दी गई है, 1,54,000 से अधिक लोगों की आजीविका को मजबूत किया गया है, और 1,71,000 हेक्टेयर से अधिक खेती की जमीन पर सुधार वाले नए तरीके अपनाए गए हैं। हर एक आँकड़े के पीछे तरक्की, हिम्मत और आगे बढ़ने के अवसरों की एक सच्ची कहानी है।

लंबे समय तक रहने वाला प्रभाव-मध्य प्रदेश की बांधवगढ़ कृषि वनोपज प्रोड्यूसर कंपनी की पूनम तिवारी ने कहा:

'सबसे बड़ा बदलाव महिलाओं में नेतृत्व करने के आत्मविश्वास का आना है। अब अधिक से अधिक महिलाएँ फैसले लेने, बाज़ारों से जुड़ने और लीडरशिप की भूमिकाएँ निभाने में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। वे न सिर्फ अपने लिए बल्कि अपने आस-पास के दूसरों लोगों के लिए भी आगे बढ़ने के नए मौके बना रही हैं। कॉर्टेवा के सहयोग ने हमारे संगठन को मजबूत बनाने और खेती-किसानी से जुड़े परिवारों में हमारे प्रभाव को बढ़ाने में बहुत मदद की है। '

नेतृत्व का नजरिया-भारत सरकार के स्मॉल फार्मर्स एग्रिबिजनेस कंसोर्टियम (स्फ्राष्ट) के पूर्व एमडी श्री प्रवेश शर्मा ने कहा: 'महिलाएं भारतीय कृषि और ग्रामीण विकास का एक बहुत ही जरूरी हिस्सा हैं। ज्ञान, हुनर

और अवसरों तक उनकी पहुँच को मजबूत करके हम उनकी कमाई को बढ़ा सकते हैं और मजबूत समाज का निर्माण कर सकते हैं। #wMillionWomen जैसी सामूहिक पहलें महिलाओं को आगे आने, नेतृत्व करने और कृषि के भविष्य में अपना योगदान देने के काबिल बनाने में अहम भूमिका निभा सकती हैं। '

समुन्नति फाइनेंशियल इंटरमीडिएशन एंड सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के को-फाउंडर श्रीधर ईश्वरन ने कहा: 'महिलाएं भारतीय कृषि के केंद्र में हैं और ग्रामीण आजीविका, खाद्य सुरक्षा व समाज के विकास को मजबूत करने में एक बहुत बड़ी भूमिका निभाती हैं। महिलाओं को ज्ञान, हुनर और नेतृत्व के अवसरों से सशक्त बनाने से ऐसे फायदे होते हैं जो सिर्फ किसी एक खेत तक सीमित नहीं रहते, बल्कि पूरे समाज को मिलते हैं। #wMillionWomen जैसी पहलें यह दिखाती हैं कि लगातार मिलकर काम करने से कैसे महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ाया जा सकता है, उनकी आजीविका को मजबूत किया जा सकता है और भारत के कृषि क्षेत्र की तरक्की में योगदान देने के लिए उनके लिए बड़े अवसर बनाए जा सकते हैं। '

सुब्रतो गीद, प्रेसिडेंट, एपीएसी कॉर्टेवा एग्रिसेंस ने कहा:- 'महिलाएं लंबे समय से भारतीय कृषि की रीढ़ रही हैं, और #wMillionWomen पहल के जरिए हमने यह सुनिश्चित करने का काम किया है कि उनके योगदान को पहचान और सहयोग मिले। महिलाओं को हुनर, अवसर और सही मंच देकर, हमने उन्हें लीडर्स, बिजनेस ओनर और समाज में बदलाव लाने वाले चेहरों के रूप में उभरते देखा है, जिनका असर सिर्फ खेतों तक सीमित नहीं है। उनकी सफलता लोगों की कमाई को बढ़ा रही है, परिवारों को सहारा दे रही है और पूरे समाज को बदल रही है।

पिछले दो सालों में जो कुछ भी हासिल हुआ है, उस पर हमें गर्व है। इसके साथ ही हमारा यह वादा आज भी उतना ही पक्का है: महिलाओं के लिए और बड़े अवसर बनाना और भारत के पूरे कृषि क्षेत्र में उनकी पूरी क्षमता को बाहर लाने में मदद करना।'

भविष्य की राह-कृषि का भविष्य नए अविष्कारों, मजबूती और सबको साथ लेकर चलने पर निर्भर करता है। इस भविष्य को तय करने में महिलाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होगी।

#wMillionWomen पहल अपने अगले चरण में कदम रख रही है, कॉर्टेवा महिलाओं के नेतृत्व वाली संस्थाओं और प्रयासों को अपना समर्थन देना जारी रखेगी। साथ ही, ऐसे नए अवसर बनाएगी जिससे अधिक से अधिक महिलाएं पूरे कृषि क्षेत्र में सफल हो सकें।

वॉल्वो कार इंडिया ने लॉन्च की अपनी पहली सॉफ्टवेयर डिफाइंड व्हीकल

नई दिल्ली, वॉल्वो कार इंडिया ने अपनी नई ऑल-इलेक्ट्रिक लग्जरी फ्लैगशिप एसयूवी ईएक्स90 को आधिकारिक तौर पर लॉन्च कर दिया है। इसकी कीमत 1.26 करोड़ रुपये (एक्स-शोरूम) रखी गई है। छह सीटों वाली इस लग्जरी फैमिली एसयूवी में स्कैंडिनेवियाई मिनिमलिस्ट डिजाइन, सुरक्षा के उन्नत मानक, शानदार ड्राइविंग रेंज और अत्याधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। ईएक्स90 भारतीय बाजार में वॉल्वो की पहली सॉफ्टवेयर-डिफाइंड व्हीकल (एसडीवी) है। इसे वॉल्वो के नए एसपीए2 प्लेटफॉर्म पर तैयार किया गया है।

वॉल्वो ईएक्स90 की बुकिंग शुरू कर दी गई है। कस्टमर एक्सपीरियंस और टेस्ट ड्राइव के लिए इसे नवंबर, 2026 से उपलब्ध कराया जाएगा। वहीं इसकी डिलीवरी जनवरी, 2027 से शुरू करने की तैयारी है। इसके अलावा, 31 दिसंबर, 2026 तक की गई सभी बुकिंग पर एक इंट्रोडक्टरी ऑफर भी दिया जा रहा है। इस ऑफर में 11 किलोवॉट का वॉल बॉक्स चार्जर और तीन साल का सर्विस पैकेज शामिल है। साथ ही, वॉल्वो कार्स की डीलरशिप की तरफ से तीन साल बाद गाड़ी की कीमत के 65% तक के बायबैक ऑफर भी मिल रहा है।

दिल्ली में आयोजित 90-90 शो के दौरान वॉल्वो कार इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री ज्योति मल्होत्रा ने कहा, 'ईएक्स90 की लॉन्चिंग ज्यादा इलेक्ट्रिक एवं सॉफ्टवेयर डिफाइंड फ्यूचर की दिशा में वॉल्वो कार इंडिया की प्रतिबद्धता का एक बड़ा पड़ाव है। यह फ्लैगशिप एसयूवी शानदार कम्फर्ट, तकनीक और बेहतरीन ड्राइविंग रेंज के साथ मोबिलिटी के एक नए दौर की शुरुआत करेगी। हमारा मानना है कि यह एक बेहतरीन लग्जरी फैमिली एसयूवी है, जो आपको मानसिक सुकून देगी। इसमें सुरक्षा को सबसे अधिक प्राथमिकता दी गई है। साथ ही इससे स्वीडिश लग्जरी का बेहतरीन अनुभव भी मिलता है। '

दुर्गा वाहिनी का विशाल पथ संचलन 15 अक्टूबर को

महिदपुर। दिनांक 15 अक्टूबर को नवरात्रि के पंचम दिवस गुरुवार दुर्गा वाहिनी द्वारा विशाल पथ संचलन का आयोजन किया जा रहा है ।यह विशाल पथ संचलन शस्त्र पूजा के बाद चंद्रावती वाचनालय से दोपहर 11.30 पर घोष वाहिनी के साथ प्रारंभ होगा ।नगर के प्रमुख मार्ग से होता हुआ पुनः चंद्रावती वाचनालय पर समाप्त होगा। संचलन में नगर एवं जिले के दायित्वधारी शामिल होंगे ।संचलन में बालिकाएं घोष सहित भ्रमण करेंगी ।संचलन में सैकड़ों की संख्या में बालिकाएं दुर्गा वाहिनी मातृ शक्ति सम्मिलित होगी ।दुर्गा वाहिनी की बहनों का ड्रेस कोड सफेद सलवार कुर्ता और केशरिया दुपट्टा रहेगा ।यह जानकारी दुर्गा वाहिनी मातृशक्ति जिला संयोजिका रजनी गुलाटी ने दी।

शब्द प्रहार...